

ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES

1.843

I

श्रीगणेशाय नमः॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ ह्रीं मायाय नमः ॥ अथादि ॥ काष्ठ परमं यजमान
न यथा दासस्य यथा भक्षकं रुतं पापिकामना
मना वा ॥ रुतं गीर्णं वसामदं वागार्जनक
विरुत्तानवध्रीसूर्यायार्थं नमः ॥ ॐ माहात्म्यः
लेति ॥ पूजा रविधिस्तं ॥ ॐ ऊगती जीवत्तगा

कलाषा उवाच ॥ त्रिविधा ॥ निवन्तपाय चन्द्राय हनरु
नमास्तुत ॥ सिद्धिस्तु ॥ पूषा राऊ नं समर्पयामि ॥
धमकाय ॥ अथादि ॥ यजमानस्तं ॥ आकृष्टं ॥ पुन
नमस्तान्न्यासार्थं पाठ पूजा ॥ आत्मपूजा ॥ ॐ ह्रीं मायाय
चन्द्राव ॥ दमास्तं नमः ॥ पूषा २ ॥ गताद्वागार्जनी ॥

ॐ गत्वा जामि २८ ॥ ॐ सामायगीतां गवः दमासनी २ पूषी
२॥ ध्यानं ॥ कन्दक पर्जनसीकां (धृतां धुमनि रूचिनी। सफ
हंसविमानसं, ध्यागव्यं त्राहि दीपिष्यं ॥ सामायगीतां ग
नं धीरवधुचन्दन (धृता कृत (धृत यज्ञायवीत (धृत मा
॥ पूषा धूप दीप रूलनेवां यादि संकल्प सिद्धि नमु ॥

पदीयेने वयं तय ॥ ॐ र्मदवा ॥ ॐ श्रीधन ॥ ॐ अः
वक्तु नमृत ॥ जगतां जीवति ॥ यजमानस्यति ॥ अरुण
ध्यादि ॥ अथ ह्यमा यष्ट चित्रजीवित्य र्दमासनी नमः पू
षी २ ॥ ॐ वाक्कदा सपित नः ॥ वाउगचन्द्र त्व र्दमासनी
२ पूषी २ ॥ ॐ वयं ॐ सामवत न ॥ वाउगचन्द्र यावद १५

॥ आदित्यादि नवग्रहस्य षूदमासर्न नमः ॥ पूष्य नमः ॥
ॐ आरुषूति १० ॥ षूदमादि दश लोकपालस्य षूदमा
सर्न २ ॥ पूष्य २ ॥ ॐ जगतामिदं ॥ १० ॥ पञ्चलोकपालस्य
षूदमासर्न नमः ॥ पूष्य २ ॥ ॐ गन्धर्वा ॥ ५ ॥ पञ्चवक्त्र
नमिष्य षूदमासर्न २ ॥ पूष्य २ ॥ ॐ सशक्तानाममी

नमः ॥ ५ ॥ मातादि पद्मादि मूर्तस्य षूदमासर्न २ ॥ पूष्य २ ॥
ॐ अर्द्धमासापन्न ४ चित्त्यादि ॥ ॐ स्वस्तिन षूदमा ॥ ५ ॥ धू
पदीप नैवद्यतय ॥ ॐ मनाईति ॥ पुनिष्ठा ॥ जायस्वत
॥ यजमानन पूजायाक ॥ ॐ सामायगीतीव षूदमासर्न
नमः ॥ पूष्य २ ॥ अर्घ्य ॥ चन्दन ॥ सिन्दूर ॥ यक्षापवीत ॥

पूषा॥ रुलादि॥ धूप दीप नैवाद्य निघ्रावकाय॥ ॐ दं
रुलपूषा नामूलधूप दीप नैवाद्यादि संकल्प सिद्धि न
नु॥ दीपदानथन॥ संकल्प॥ अद्यादि। अमूक (ग) य
जमानस्य अमूकनाम दासस्य यथा ग्राहक रुलयापि
कामनार्थं गीतां गव लक्ष्य परिमिता निवर्त्तिका निदी

पदानमर्हं कत्रिषा॥ ॐ यज्ञाग्रता॥ मन्त्रकायक॥
भूर्यविय॥ यजमानस्य यथा ग्राहक रुलयापि का
मनार्थं गीतां गव सामदवताय शुभाहर्षं गृहाण
साह॥ ॐ सर्वस्वी नाम्पूषा निरत्ना निविधिनि
वाच उरुग्रावलाकस्य ॐ दमर्षं नमानम॥ ॥

मधुल॥ स्फा॥ उयाणीतिचवर्षादि चतुर्मास न
सयूत॥ चन्द्रसदृश विख्याता नराधर्मापापसंक्षय
॥ जगताजीव हताय कलाघातं न धामि ॥ ६ ॥ निव
रूपाय उन्नाय हन हस्यन मासुत ॥ दक्षिण नय
॥ अलिख क आनी वीद ॥ सूर्य साद्विधाया ॥ ७ ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

आम्रकवि

1.843

I

MANUSCRIPTS

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय

यत्किंचिदपि विदुः स वा असुखं नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय नमो भगवते वासुदेवाय









